खुशहाल रहे एन फ्रैंक का पेड़

एन फ्रैंक ट्री

लगभग हर सुबह जब अपने फेफड़ों से दम घोंटने वाली हवा को निकाल बाहर करने के लिए मैं अटारी पर जाती हूँ, फर्श पर अपनी पसन्दीदा जगह पर खड़े होकर मैं नीले आकाश और बेपत्ता चेस्टनट वृक्ष की ओर देखती हूँ जिसकी टहनी पर जमी वर्षा की बूँदें चाँदी-सी चमकती हैं, सीगल और दूसरे पक्षी हवा में तैरते हैं। जब तक यह इसी तरह बना रहेगा, मैं सोचती हूँ, मैं इसे देखने के लिए जीवित हूँगी, ये धूप, यह आकाश, जब तक यह रहेगा, मैं दुखी नहीं होऊँगी।

एन फ्रैंक ने ऐसा 23 फरवरी 1944 को अपनी डायरी में लिखा था। यह पेड़ उसके तिमंज़िला घर के पिछवाड़े लगा था जिसमें एन और उसके परिवार ने 25 महीने नात्सियों से डरते-छुपते गुज़ारे थे। दूसरे महायुद्ध के उन दिनों में हिटलर के सैनिकों के डर का आलम यों था कि उसके जैसी बातूनी लड़की न तो बात कर सकती थी न बाथरूम का फ्लश चला सकती थी। घर की तमाम खिड़कियाँ गत्ते से बन्दकर दी गई थीं। आप सोच सकते हैं कि एक खिड़की से दिखाई देने वाले पेड़ ने एन को कितना सुकून दिया होगा।

पिछले 21 नवम्बर को यह पेड़ काट डाला जाने वाला था। कारण इसकी बीमार हालत। 150 से 170 वर्ष पुराना यह पेड़ सन् 1993 से लगातार फफूँद और खोखला करने वाले कीड़ों से जूझ रहा है। एम्सटर्डम नगर पालिका को डर था कि 27 टन वजनी यह पेड़ यदि गिरा तो लोग दब सकते हैं और पास ही में बने एन फ्रैंक संग्रहालय (जिसमें एन छुपी थी) को भी नुकसान पहुँच सकता है। एन के शहर में ऐसे बहुत लोग निकल आए जिन्होंने इस पेड़ को काटने का विरोध किया। जिनके अहाते में यह पेड़ खड़ा है उन हेनरिक पोमेक ने कहा कि मैं तो पेड़ काटकर रहूँगा। एन फ्रैंक संग्रहालय के निदेशक हांस वेस्त्रा ने कहा कि पेड़ गिरने से संग्रहालय को नुकसान पहुँचा तो वे हैनरिक पर मुकदमा करेंगे। मामला अदालत में गया। जज जर्जन बेड दोनों पक्षों की बात सुनने के बाद खुद पेड़ देखने गए। वहाँ उन्होंने पेड़ पर टक-टक कर उससे बात की। एक इंजीनियरिंग कम्पनी ने मशीन से पेड़ के साथ खींचा-तानी करके सिद्ध कर दिया कि कुछ वर्ष तक तो पेड़ अपनी जगह खड़ा रहेगा। न्यायालय लौटकर जज साहब ने कह दिया कि पेड़ नहीं कटेगा। हर वर्ष लाखों लोग एन फ्रैंक संग्रहालय देखने आते हैं। "एन फ्रैंक ट्री" बच्चों में आपस में बातचीत शुरू करने वाले एक प्रोजेक्ट का भी नाम है। बच्चे इस पेड़ के नीचे गिरी हुई पत्ती पर अपना नाम लिख कर एन के लिए अपना स्नेह जताते हैं। दुनिया भर के 200 से ज़्यादा स्कूलों के बच्चों ने ऑन लाइन अपने नाम यहाँ दर्ज कराए हैं। एन के पिता ने एन का लिखा पढ़कर कहा था कि उन्हें कैसे पता हो सकता था कि यह नज़ारा एन को सबसे ज़्यादा खुशी और जीने की प्रेरणा दे सकता है? वह तो कभी पेड़-पौधों में रुचि ही नहीं लेती थी। लेकिन पिंजरे में बन्द पक्षी जैसी हालत ने उसे प्रकृति से प्रेम करना सिखा दिया। प्रकृति से प्रेम करने के लिए क्या हमें पृथ्वी के कैदखाना बनने का इन्तज़ार है? बगीचे की यह खिड़की एन फ्रैंक के कमरे की ही खिड़की है और उससे दिखाई देता पेड़ एन फ्रैंक का पेड़ है।

एन फ्रैंक की यह डायरी अब हिन्दी में भी उपलब्ध है।

एक किशोरी की डायरी नाम से यह किताब राजकमल प्रकाशन ने छापी है। इसकी कीमत डेढ़ सौ रुपए है। इसे मँगाने के लिए तुम इस पते पर लिख सकते हो:

राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग
नई दिल्ली - 110002